Page No.
Date :

एवं कक्षागत गतिविधि में सम्मिलित होने के अवसर भी देती है, रणनीति के तहत अध्यापक यह भी निर्धारित करते हैं कि उपलब्ध समय में विषय की व्याख्या, विद्यार्थी समझ की जांच, अवसर, पाठ्यसहगामी गतिविधि, समस्याओं की पहचान [illegible], एवं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उसके यथोचित समाधान हेतु किस-किस प्रकार से कार्य करने है, स्पष्टीकरण द्वारा विषय वस्तु को सरल एवं सार्थक ढंग से स्पष्ट करने के साथ-साथ विद्यार्थियों के शब्द, भण्डार एवं सूक्ति (वाक्य) भण्डार में वृद्धि करने का भी प्रयास किया जाता है, वाक्यों को जोड़ने की कला के साथ-साथ, विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति के विकास में भी सहायक होते हैं, यह स्पष्टीकरण उपकरणों की सहायता से एवं मौखिक रूप से दोनों प्रकार से होते हैं, प्रश्नोत्तरी में जहाँ कक्षा की सार्थकता की जाँच की जाती है वहीं विद्यार्थी अपनी शंका को स्पष्ट रूप माध्यम से रखना भी सीखते हैं व पूछे गये प्रश्न के उत्तर में भी भाषा कार्य करती नज़र आती है, इस प्रकार सम्पूर्ण प्रक्रिया में प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से कार्य करती नज़र आती हैं, व्याख्यात्मक पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से निम्नलिखित सोपान उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं:—

Page No.
Date :

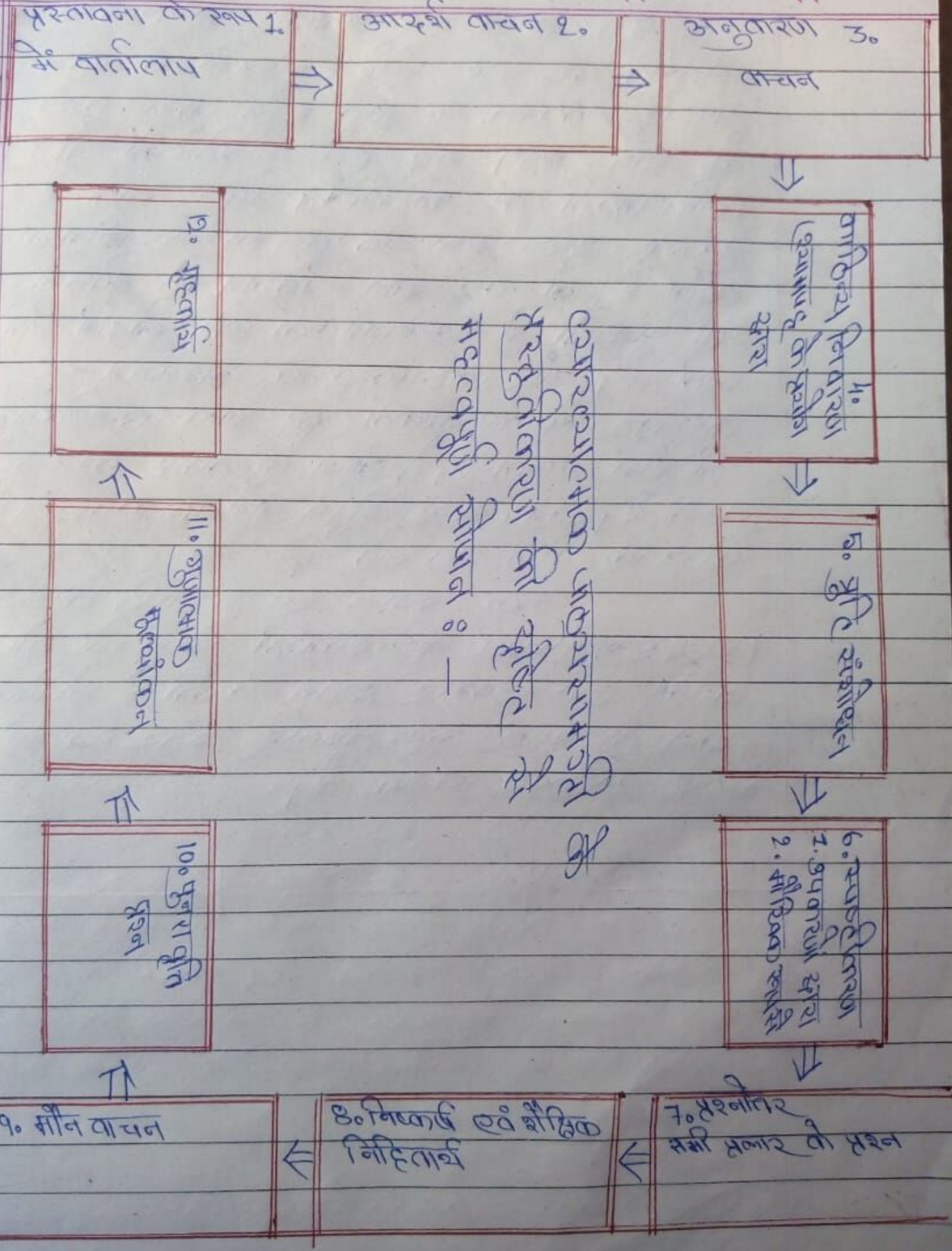

उच्चारणात्मक पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण सोपान :-

1. प्रस्तावना के रूप में वार्तालाप ⇒
2. आदर्श वाचन ⇒
3. अनुकरण वाचन ⇓
4. काठिन्य निवारण (श्यामपट्ट के प्रयोग द्वारा) ⇓
5. त्रुटि संशोधन ⇓
6. स्पष्टीकरण
   1. उपकरणों द्वारा
   2. मौखिक रूप से ⇓
7. प्रश्नोत्तर सभी प्रकार के प्रश्न ⇐
8. निष्कर्ष एवं शैक्षिक निहितार्थ ⇐
9. मौन वाचन ⇑
10. पुनरावृत्ति प्रश्न ⇑
11. गुणात्मक मूल्यांकन ⇑
12. गृहकार्य

... का पूर्व आभास

व्याख्या वाक पाठ्यसामग्री के प्रस्तुतीकरण हेतु बनायी गयी रणनीति के तहत वाक योजना में कई महत्वपूर्ण बिंदु सम्मिलित होते हैं और प्रत्येक बिंदु भिन्न-2 रूपों में शैक्षिक निहितार्थ तथा व्यक्तित्व विकास का कार्य करते नज़र आते हैं। जहाँ व्याख्या के प्रारंभिक चरण में प्रस्तावना विद्यार्थी के पूर्व ज्ञान को जानने तथा पूर्व ज्ञान को नवीन ज्ञान से जोड़ने का कार्य करती है वहीं आदर्शवाचन, अनुकरण वाचन भाषाई क्षमता के विकास में सहायक होते हैं। श्रवण द्वारा विषयवस्तु का श्रवण, ग्रहण एवं मनन का अवसर देते हैं तो वहीं अनुकरण वाचन भाषाई उच्चारण, त्रुटि संशोधन

इस प्रकार व्याख्यात्मक पाठ्यसामग्री के अंतर्गत कई छोटे-छोटे सोपानों के द्वारा भाषाई विकास के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ कई ऐसे गतिविधियों में अधिगमकर्ता को सम्मिलित किया जाता है जिनका आधार पाठ्यवस्तु या पाठ्यसामग्री होती है, जो कई ज्ञान-विज्ञान के विषयों एवं अनुभवों से अधिगमकर्ता को जोड़ती चली जाती है। और पाठ्यवस्तु के अध्ययन-अध्यापन से अधिगमकर्ता का भाषा पर अधिकार भी होने लगता है, व भाषा के प्रवाह को समझने लगते हैं। जिन शब्दों से वे परिचित तक न थे वे उनके मित्र बन जाते हैं।

अतः समझ एवं रणनीति के आधार पर व्याख्यात्मक पाठ्यसामग्री विद्यार्थियों को अनेकों ऐसे अवसर प्रदान करती है जो विषय ज्ञान के साथ-साथ भाषाई स्तर पर भी उन्हें परिपक्व बनाते हैं।

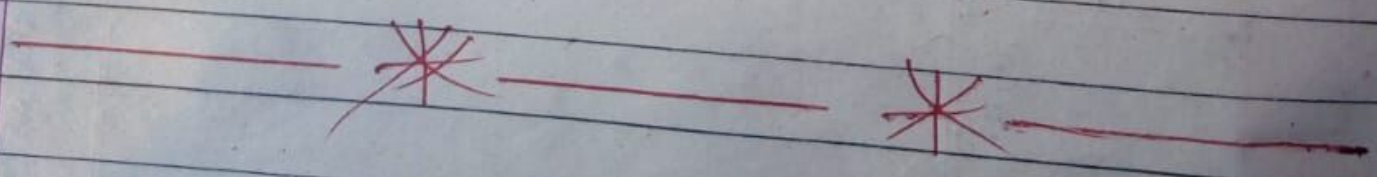

—— * —— * ——